नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

प्रधानमंत्री कार्यालय : विकास एवं आकलन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

वर्धा, 18 जनवरी 2019 : गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में दिनांक 16 जनवरी 2019 को 'प्रधानमंत्री कार्यालय : विकास एवं आकलन' विषय पर ग़ालिब सभागार में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध राजनैतिक चिन्तक एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में राजनीति विज्ञान के प्रो. रजनी रंजन झा मौजूद थे।

अपने सारगर्भित वक्तव्य में प्रधानमंत्री कार्यालय पर व्याख्यान देते हुए प्रो.झा ने कहा कि हमारी संसदीय व्यवस्था में प्रधानमंत्री का पद बहुत

महत्वपूर्ण होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात शासन प्रणाली संसदीय से प्रधानमंत्री व्यवस्था की ओर जा रही है। भारत में पिछले दो-तीन दशकों के इतिहास को देखें तो एक प्रगति हुई है और जहाँ हमें प्रधानमंत्री पद्धति वाली सरकारों में अमेरिकी राष्ट्रपति एवं भारतीय प्रधानमंत्री की कार्य संस्कृति का मिला-जुला स्वरुप देखने को मिल रहा है, इसीलिए मैंने इसे एक नया नाम दिया है 'प्राइमेडेंसियल सिस्टम'। प्रधानमंत्री को कार्य करने के लिए एक कार्यालय की जरूरत होती है। जवाहर लाल नेहरू के समय में प्रधानमंत्री के लिए एक छोटा सा कार्यालय होता था लेकिन समय के साथ-साथ इस प्रधानमंत्री के कार्यालय का भी विकास होता गया। लाल बहादुर शास्त्री के समय में उनकी बीमारी के चलते पीएमओ की शक्ति में वृद्धि होने लगी। प्रधानमंत्री कार्यालय को सर्वप्रथम प्रधानमंत्री सचिवालय की संज्ञा दी गई जो मोरारजी देसाई के समय में प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) कर दिया गया।

वर्तमान पीएमओ की चर्चा करते हुए प्रो. झा ने इसे अब तक का सबसे शक्तिशाली की पीएमओ करार दिया । सूचना तकनीक और संचार क्रांति में दौर में यह कार्यालय सिर्फ अपनी गतिविधियों से ही नहीं बल्कि जनता से जुड़ने को कौशल और संप्रेषण करने मेंभी सफल साबित हुआ है ।

जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल में प्रधानमंत्री सचिवालय में 'प्रिंसिपल प्राइवेट सेक्रेटरी' (पीपीएस) की व्यवस्था थी। लाल बहादुर शास्त्री जी के समय में एल. के. झा पीपीएस के रूप में रहे जिन्हें 'सुपर कैबिनेट सेक्रेटरी' की संज्ञा दी गई। इंदिरा गाँधी के समय में एल. के. झा के कार्यों की आलोचना होने पर पी.एन.हक्सर को पीपीएस बनाया गया, जिन्हें सरकार की नीतियों का 'थिंक टैंक' कहा गया। पीपीएस का नाम बदलकर सेक्रेटरी टू पीएमओ कहा गया एवं अब उसे प्रिंसिपल सेक्रेटरी टू पीएम कहा जाता है। अटल बिहारी बाजपेयी के समय में ब्रिजेश मिश्र पहले ऐसे व्यक्ति थे जो 'प्रिंसिपल सेक्रेटरी टू पीएम' के साथ साथ 'नेशनल सिक्योरिटी ऐडवाइज़र' थे और इस समय नरेन्द्र मोदी जी के समय में प्रिंसिपल सेक्रेटरी टू पीएम नृपेन्द्र मिश्र हैं। व्याख्यान के उपरान्त मुख्य वक्ता से श्रोता द्वारा पूछे गए प्रश्नों का वक्ता ने उत्तर दिया।

कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह ने प्रो. आर.आर.झा को सूतमाला, स्मृति-चिन्ह एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया। उन्होंने अपने संस्मरण साझा करते हुए कहा कि एक बार चर्चा करते हुए जब मैंने प्रो. झा से पूछा कि आप किस देश के जनतंत्र को सर्वश्रेष्ठ मानते है तो उन्होंने उत्तर देते हुए स्वीडन का नाम लिया। प्रो. झा का 'अकादमिक जगत' में एक बड़ा नाम है जिन्होंने स्वीडन में 'ओम्बड्समैन' पर प्रमाणिक कार्य किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. मनोज कुमार राय ने प्रो. आर.आर.झा के व्यक्तित्व से लोगों को अवगत कराते हुए कहा कि प्रो. आर.आर. झा विद्वान होने के साथ-साथ एक सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं।

इस मौके पर गांधी एवं शांति अध्ययनविभाग की शोध छात्रा हुस्न तब्बसुम ने अपनी लिखित पुस्तक 'कविताओं में राष्ट्रपिता' मुख्य वक्ता को भेंट की एवं अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. चित्रा माली ने किया। कार्यक्रम के अवसर पर डॉ. राकेश मिश्र, डॉ. डी.एन. प्रसाद, डॉ. पियुष प्रताप सिंह, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. रविन्द्र बोरकर, डॉ. सुशील त्रिपाठी, शोधार्थी विजय शंकर चौधरी, धम्म रतन लामा, नलिन मंडल, शिव गोपाल, मेधावी शुक्ला, प्रदीप मिश्रा देवेन्द्र मौर्य, निशा राय, रूपा, अश्वनी रावत, रविशंकर सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।